सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2022 का द्वितीय अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस अंक में सर्वप्रथम देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित ''भारतीय धर्म एवं वैष्णव सम्प्रदाय'' विषयक लेख में भारतीय धर्म की महत्ता को बतलाते हुये वैष्णव भक्ति के आचार्यों द्वारा प्रवर्तित दार्शनिक सम्प्रदायों एवं उनकी परम्पराओं पर प्रकाश डाला गया है। तत्पश्चात् डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'द्यावापृथिवी : स्वरूपविमर्श' में वेद के वैज्ञानिक पक्ष को आधार बना कर द्युलोक एवं पृथ्वीलोक के उत्पत्ति के विषय में वैदिक मत का प्रस्तुतीकरण किया गया है। तत्पश्चात् गोपीनाथ पारीक 'गोपेश' द्वारा लिखित विद्या की देवी सरस्वती शीर्षक लेख में वसन्त पंचमी पर मनाये जाने वाले सरस्वती महोत्सव के विषय में शास्त्रोक्त मन्तव्यों का उल्लेख किया गया है। डॉ. ललित किशोर द्वारा लिखित 'अभिनवसंस्कृतरूपकम् पूर्वशाकुन्तलम्' लेख में डॉ. हरिराम आचार्य द्वारा रचित पूर्वशाकुन्तल नाटक के साहित्यिक समालोचना प्रस्तुत हुई है। इसी क्रम में धनराज दाधीच द्वारा लिखित ''उर्मिला'' आधुनिक हिन्दी साहित्य सृजन के क्षेत्र में श्रेष्ठ गीतिकाव्य है। नेहा शर्मा द्वारा लिखित 'भारतीय वाङ्मय एवं शिक्षक-शिक्षार्थी संकल्पना' लेख में प्राचीन भारत में प्रचलित गुरु शिष्य परम्परा तथा शैक्षिक आदर्शों की पृष्ठभूमि को उपस्थापित कर भारतीय शिक्षा के स्वरूप का दिग्दर्शन किया गया है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावनाशतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शमा